

महाभारतवन्दन

प्रथम भाग

आदि, सभा, वनपर्व हैं

आदि, सभा, वनपर्व हैं  
काशीवासिनी साधनानुसूचक

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरोंने संस्कृतका सारा-  
श यथावस्थितले अतिपरिश्रमसे भाषा, वर्ण, मात्रा  
वृत्तमें अतिरुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेश  
ने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाश मुद्रायन्त्रमें श्री  
परिष्कृत लक्ष्मीनारायणसे शुद्धकराय संवत् १८८६  
में मुद्रित कराया था

सम्पूर्ण विद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक  
ऐतिहासकाक्षियों के पठन पाठनार्थ

बानपर्वि परिष्कृत रामरत्न के ग्रन्थ से

स्विसरीषार

लखनऊ

श्री नवलकिशोर (सी, आई, ई) के व्यापकविषय

अगस्त सन् १८९१ ई०

Hindust

Regt.

Date. 29/12

FILE No.